शिक्षक शिक्षा के शिक्षकों में चिंतन प्रक्रिया के प्रति दृष्टिकोण

शोध निर्देशक
डॉ.मनीष भटनागर
असिसटेन्ट प्रोफेसर

शोधार्थी
सीमा शर्मा

शिक्षा विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान।

सार

चिंतन प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण कारक है जो शिक्षकों के पेशेवर जीवन के दो मुख्य क्षेत्रों में बदलाव लाता है, अर्थात् शिक्षक पहचान और शिक्षक गुणवत्ता। चिंतन प्रक्रिया उन महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं में से एक है जो व्यक्तियों को अपने अनुभवों से सीखने और अपनी प्रथाओं और ज्ञान में लगातार सुधार करने में सक्षम बनाती है। चिंतनशीलता शिक्षक के विकास को प्रभावित करती है और छात्रों के सीखने को बढ़ाती है। शिक्षक का दृष्टिकोण शैक्षिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और शिक्षण प्रथाओं और छात्र परिणामों दोनों को प्रभावित करता है। दृष्टिकोण एक मनोवैज्ञानिक निर्माण है जो किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक प्राथमिकताओं, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और किसी विशेष वस्तु या स्थिति के प्रति व्यवहारिक प्रवृत्तियों को शामिल करता है। शिक्षक के दृष्टिकोण और चिंतनशील प्रथाओं के बीच एक मजबूत संबंध है। चिन्तनशील प्रक्रिया के सम्प्रत्यय के प्रति शिक्षक शिक्षकों का दृष्टिकोण काफ़ी हद तक सकारात्मक है, लेकिन समय और पूरी तरह से सहयोगात्मक, बिना निर्णय वाले माहौल की कमी जैसे क्रमिक मुद्दों के कारण इसका वास्तव में लागू होना अक्सर ठीक-ठाक ही रहता है। शिक्षक शिक्षा प्रोग्राम में चिन्तनशील प्रक्रिया को असरदार तरीके से शामिल करने के लिए इन आम रुकावटों को दूर करने के लिए सोची-समझी व्यूह रचना, स्पष्ट निर्देशन और संस्थागत् सहयोग की ज़रूरत होती है।

मुख्य शब्द :- चिंतन प्रक्रिया, चिंतनशीलता, चिंतनशील अभ्यास,व्यावसायिक विकास।

प्रस्तावना

शिक्षक शिक्षा का मूल सिद्धान्त चिन्तनशील शिक्षण प्रतिभान पर होता है। जिससे अनुभवी और नवीन शिक्षक लाभ प्राप्त कर सकें। चिन्तन प्रक्रिया वह महत्वपूर्ण कारक है जो शिक्षक में मुख्यतः दो प्रकार से बदलाव लाता है। वह अपनी पहचान बना पाते है। और दूसरा उसकी शिक्षण गुणवत्ता में परिवर्तन लाना है। शिक्षक पहचान से तात्पर्य स्वयं को शिक्षक के रूप में समझना, और उसीकर में स्वयं को साबित करना। यह शब्द शिक्षक के व्यक्तिगत व पेशेवर दोनों पहलुओं को दर्शाता है।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते है, कि चिन्तन प्रक्रिया शिक्षकों को अपनी भावना, विश्वास और शिक्षण के क्षेत्र में आने वाली चुनौती के लिये, तैयार होने के अवसर प्रदान करती है। उदाहरण के लिये यदि कोई बच्चा कक्षा में ध्यान नहीं दे तो शिक्षक अपने चिन्तन मनन द्वारा विविध क्रिया कलापों के माध्यम से उसका कारण जानने और कारण का निवारण करने हेतु सक्षम हैं होता है। अर्थात उपचारात्मक और निदानात्मक शिक्षण का प्रयोग कर सकते है।

शिक्षक की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायकः- चिन्तनशील प्रक्रिया, शिक्षकों की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक होता है। जिससे व्यावसायिक विकास सर्वाधिक प्रभावित होने वाला पहलू हैं। जिसको इस प्रकार जाना जाता है कि कैसे एक एक शिक्षक

विशेष परिस्थितियों में विशेष ज्ञान व कौशल से परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करता है। तथा शिक्षक शिक्षण के दौरान बेहतर पाठ योजना, कक्षा की दैनिक गतिविधियों को तैयार करता है। अतः चिन्तन द्वारा वह अपनी गुणवत्ता में सुधार करता है।

चिन्तन और अनुभवः- चिन्तन उन महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं में से हैं जो व्यक्ति को अपने अनुभव से सीखने और अपनी प्रथाओं और ज्ञान में सुधार को संभव बनाती है। साहित्य से ज्ञात है कि चितनशीलता शिक्षक के विकास को प्रभावित करती है। जिससे वह अपने छात्रों को सीखाने में मदद करती है। चिन्तनशीलता को एक कौशल के रूप में देखा जाता है जो शिक्षकों के चल रहे विकास को आगे बढ़ाने, अनुभवों पर विचार करने, याद करने और मूल्यांकन करने की प्रक्रियाको संदर्भित करती है। इसमें पिछले अनुभवों का स्मरण भी शामिल है, जो शिक्षक के व्यक्तित्व को निखारने का कार्य करता है। चिंतनशीलता आत्म परीक्षण या आत्म मूल्यांकन भी है। जिसे शिक्षकों को नियमित रूप से शिक्षण प्रथाओं की व्याख्या और विकास के लिये नियोजित किया जाना चाहिए। चिन्तन प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा छात्रों को शिक्षण मुद्दों व समस्या समाधान की जानकारी देना संदर्भित है। शिक्षकों को चितंनशील होने के लिये आत्म जागरुकता, कार्यस्थल चिंतन, सतही चिंतन व आत्म मूल्यांकन करना जरूरी है।

चिंतनशील शिक्षकों की विशेषताऐंः- शिक्षक कक्षा की स्थितियों पर विचार करते है शिक्षण के नये तरीकों को ढूँढने का प्रयास करते है। एंव समस्या व संदेहों पर चर्चा करते हैं। विषयों के लिये नये दृष्टिकोण और समझ और आलोचनात्मक सोच विकसित करनें के लिये छात्र के बीच जाँच की भावना को विकसित व प्रोत्साहित करते हैं।

चिंतन प्रक्रिया प्रतिमानका विकास :- चिंतन प्रक्रिया शब्द के विषय मे दो प्रभावशाली सिद्धांतकारों डेवी और शॉन का जिक्र आवश्यक हो जाता है। डेवी चिंतन प्रक्रिया को एक व्यवस्थित सोच कार्य के रूप में देखते हैं। जहाँ शिक्षक अपने शिक्षण के बारे में समझदारी भरे निर्णय लेने के लिये अपने अनुभव और अपने ज्ञान, विश्वासो से प्राप्त साक्ष्य का उपयोग करते है। डेवी के समान ही शॉन ने चिंतन प्रक्रिया की अवधारणा को समय-सीमा के पहलू को पेश करके सोच प्रक्रिया की निरंतरता के लिये जिम्मेदार माना है, जिसमे चिंतन होता है। शॉन कहते है कि चिंतन केवल शिक्षण अनुभव प्राप्त करने के बाद ही नहीं होता है, बल्कि यह शिक्षण प्रक्रिया के दौरान भी होता है, उनका कहना है कि जब, शिक्षक अपने पिछले अनुभवों की समझ के आधार पर अपने भविष्य के शिक्षण अनुभव के बारे में निर्णय लेते तो यही शोध का आधार बन जाता है। इसलिये डेवी और शॉन की चिंतन प्रक्रिया की अवधारणाओं का अंतिम परिणाम शिक्षण तकनीकों या कक्षा व्यवहार के संदर्भ में बहुत अधिक प्रभावशाली होता है। एक शिक्षक अपने पिछले अनुभवों पर चिंतन करते समय भावना, विश्वास, साहस, संवेदनशीलता, लचीलापन, निर्णायकता, सहजता और प्रतिबद्धता जैसे अपने व्यक्तिगत मूल गुणों को अनदेखा करके, शिक्षक अगले पाढ में सतही चिंतन करके अप्रभावी समाधान देने का जोखिम बढ़ाते है। दूसरे शब्दों में कहो तो कहा जा सकता है कि एक शिक्षक को चाहिए कि जब वह अपनी शिक्षण क्षमताओं पर चिंतन करें, तो बाहर से स्थितियों का पता लगाने की आवश्यकता होती है। जबकि वे अपनी भावनाओं, विश्वासों, और अन्य मूल गुणों पर चिंतन करते समय खुद को अंदर से परखे। क्योंकि मेरा मानना है कि शिक्षकों की आत्म-समझ और पेशेवर भूमिकाओ और व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

जब चिंवन प्रक्रिया को क्रियान्वित करने की बात आती है तो सेवा- पूर्व शिक्षकों के पास चिंतन करने के तरीके के बारे में एक अस्पष्ट तस्वीर हो सकती है। अतः शिक्षक शिक्षा में चिंतनशील प्रक्रिया को निर्देशित करने हेतु गिब्स ने सर्वप्रथम **1988** में अपना एक प्रतिमान प्रस्तुत किया। छह चरणों का वर्णन निम्नलिखित क्रम में किया गया है।।

विवरण -भावनाएं → मूल्याकन -विश्लेषण - निश्कर्श - कार्य योजना

विवरणः- यह चरण सेवा पूर्व शिक्षकों के बारे में बताता है कि, वे किसी भी घटना के बारे में कोई निर्णय या निष्कर्ष तुरंत ना निकाले, बल्कि उस पर फिर से विचार करे, ताकि बेहतर समझ की इच्छा पैदा हो सकें।

भावनाऐ -ः यह चरण सेवापूर्व शिक्षकों के उन और भावनाओं को जानने के लिये होता है, जो घटना उसके मन में थीं, हाँ उन्हें इस बात का ध्यान रखना है कि निर्णय ना ले, बल्कि इस बात को जानना और समझना जरूरी है कि धटना से उनके विचारों और भावनाओं पर क्या प्रभाव पड़ा।

मूल्याकंन :- सेवापूर्व शिक्षक यह मूल्यांकन कर सकते है कि, घटना में क्या अच्छा या बुरा था। और इसमें यह भी शामिल है कि उसरों ने क्या अच्छा किया, था, क्या अच्छा नहीं किया। सेवापूर्व शिक्षकों को दोनों पर विचार करना चाहिये। हाँ कई बार ऐसा भी हो सकता है कि घटना पूरी तरह से नकारात्मक लग सकती है।

विश्लेषणः- सेवापूर्व शिक्षक अपने मौजूदा ज्ञान, प्रासंगिक शैक्षणिक साहित्य या बाहरी दृश्टिकोण के आधार पर अपने कार्यो को उचित ठहरा सकते है, या उनकी आलोचना कर सकते है।

निष्कर्षे -ः सेवापूर्व शिक्षक इस बारे में तार्किक निष्कर्ष निकालने के लिये कि उन्होंने क्या सीखा है, या वे क्या अलग तरीके से कर सकते थें, पहले जो कुछ भी उन्होंने सोचा है उसे एक साथ लाते है।

कार्य योजनाः-पिछले चरणों पर, विचार करते हुये, सेवापूर्व शिक्षक एक समान स्थिति में सुधार के लिये एक योजना का सुझाव देते है।

गिब्स के अतिरिक्त कोर्थगेन और वासलोस ने चिंतन प्रक्रिया के विकास की प्रकिया को बताया है। वे बाहर से अंदर की ओर बढ़ते है, व मन को प्याज के सादृश्य का उपयोग किया है। पहली परत में चुनौतियों का पता लगाते है, दूसरी परत मैं चुनौतियों का सामना कैसे करना ह,ै तीसरी परत में चुनैतियों का हल कैसे निकालना है और चौथी और अंतिम परत में, चुनौतियों के प्रति अपनी धारणाओ और विश्वासों का पता लगाते है। इस प्रकार यह जाना जा सकता है कि सेवा पूर्व शिक्षक अपने पेशे का क्या अर्थ लेती और क्या उनको प्रेरित करता है।

चिंतनशील प्रक्रिया के प्रति सकारात्मक व नकारात्मक दृष्टिकोण :-

किसी भी तथ्य, विचार, प्रथा को पसंद या नापसंद करना दृष्टिकोण को बताता हैं। और जब हम परिवर्तन के प्रति अनुकुलता की प्रक्रिया अपनाते है, तो सकारात्मक दृष्टिकोण कहलाता है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि, सकारात्मक दृष्टिकोण अनुकूलन और स्वीकृति की प्रक्रिया को अधिक आसानी से तेज कर देता है लेकिन थोड़ा कम सकारात्मक दृष्टिकोण प्रक्रिया में देरी करता है। अतः जब सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है तो शिक्षको को नई सिफारिशों को कुशलतापूर्वक अपनाने और बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिलती है। अतः यदि सकारात्मक दृष्टिकोण की बात क तो चिंतनशील प्रक्रिया के द्वारा व्यावसायिक विकास, समायोजन करने की क्षमता, , आदि प्रभावित होती है। वहीं यदि मैं

नकारात्मक दृष्टिकोण की बात करूँ तो समय की कमी, प्रशासनिक सहयोग की कमी, मूल्याकन का डर , आदि नकारात्मक दृष्टिकोण की ओर संकेत करते है।

चिंतनशील शिक्षकों के गुण :- चिंतनशील शिक्षकों में विभिन्न गुण देखने को मिलते है, पर मैनें यहाँ मुख्यता तोन गुणों पर ही विचार किया है, जो **(1)** खुली मानसिकता **(2)** जिम्मेदारी **(3)** सम्पूर्णता शिक्षक की शैक्षिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सैद्धान्तिक अवलोकन :-

शिक्षक की दो क्रियाओं के बीच का अन्तर सैद्धान्तिक अवलोकन कहलाता है।.

(1) चिंतनशील क्रिया और **(2)** नियमित क्रिया

चिंतनशील क्रिया किसी भी विश्वास या कल्पित रूप का सक्रिय लगातार और सावधानी पूर्वक विचार करना है। तथा उन आधारों का समर्थन करते है और आगे के निष्कर्षो तक पहुँचते है।

नियमित कारवाई पंरपरा, आवेग, और अधिकारों द्वारा निर्देशित होती है। यह अतीत और वर्तमान के शिक्षकों के अनुभव से जुड़ा हुआ है। शिक्षण के दौरान होने वाली समस्याओं से निपटने के - लिये चिंतनशीलता की आवश्यकता होती है।

शिक्षक शिक्षा में चिंतन प्रक्रिया की चुनौतियाँ -

चिंतन प्रक्रिया की प्रक्रिया में सेवापूर्व शिक्षकों को कई चुनौतियाँ का सामना करना पड सकता है जो निम्नानुसार है**%&**

1- **सेवापूर्व शिक्षकों के चिंतन को बढ़ावा देनाः-**

छात्र उपलब्धि में सुधार के लिये चिंतनशील पत्रिकाएं, सहयोगात्मक शिक्षण, पाठों की रिकोर्डिंग, सहकर्मी अवलोकन का अच्छा उपयोग किस प्रकार करें कि सेवा- पूर्व शिक्षकों की आत्म जागरुकता को बढ़ाया जा सके, व्यक्तिगत समझ का निर्माण और विस्तार हो सकें तथा समझ की गहराई बड़े।

2- **चिंतन के उच्च स्वर को आगे बढ़ाना** -

चिंतनशील -पत्रिकाओं द्वारा प्रदान किये जाने वाले कई लाभों के बावजूद, चिंतनशील पत्रिकायें लिखने की प्रक्रिया हमेशा दोषरहित नहीं होती है। किंतु इस चिंता को दूर करने के लिये मनन प्रक्रिया को आधार माना गया है, और थे मनन प्रक्रिपा को चार स्तरो में वर्णनात्मक लेखन, वर्णनात्मक मनन, संवादात्मक मनन और आलोचनात्मक मनन शामिल है। इतना ही नहीं मनन के आधार मानते हुये लैरोवी ने भी मनन के चार स्तर शामिल माने है। पाठ्यचर्या चिंतन, समालोचनात्मक चिंतन, सतही चिंतन और शैक्षिक चितंन में वर्गीकृत किया है।

शिक्षक शिक्षा में चितन प्रक्रिया का उपयोग -%

चितन प्रक्रिया को बढ़ाने में प्रौधोगिकी का उपयोग वर्तमान की महत्ती आवश्यकता हो गई है। जैसे-जैसे हमारा समाज **21**वीं सदी में प्रवेश कर रहा है, प्रौद्योगिकी हर किसी के जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभा रही है। अतः शिक्षक शिक्षा मे चितंन प्रक्रिया को बढ़ावा देने में पा्रैद्यौगिकी का उपयोग दो प्रकार से किया जा सकता है.। विडियों और सोशल मीडिया का उपयोग सेवापूर्व शिक्षकों के लिये चिंतन करने की क्षमता विकसित करने का एक आशाजनक साधन है। सोशल मीडिया जो समुदाय की भावना पैदा करता है, जहाँ लोगों को सहयोग करने, चर्चा करने, साझा करने, और विचारों और विश्वासों

को चुनौती देने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। इतना ही नहीं जब सेवापूर्व शिक्षको को अपनी प्रविष्टियों को ऑन लाइन दर्ज करने को कहा जाता है. तो वह आने वाली भावी सेवापूर्वक शिक्षको के लिये मार्गदर्शिका का कार्य करता है।

निष्कर्षे

अतः निष्कर्ष में यही कहना चाहूंगी कि उत्थान की प्रक्रिया तभी शुरू हो सकती है, जब मानकों को सुधारने की क्षमता और शिक्षकों और छात्रों को जोड़ने का उत्साह, जिम्मेदार लोगों का मार्गदर्शक बन जाए । शैक्षिक विभाजन को पाटने और हर महत्वाकांक्षी शिक्षण को शामिल करने की आवश्यकता,चिंतनशील प्रक्रिया को सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। लेकिन समय और पूरी तरह से सहयोग के विना निर्णय लेने वाले माहौल की कमी जैसे मुद्वों के कारण वास्तव में लागू होना अक्सर अवसरोचित ही रहता है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में चिंतनशील प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण तरीके से शामिल करने के लिये, आ रही, रूकावटो को दूर करने के लिये. एक मजबूत व्यूह रचना, स्पष्ट निर्देशन संस्थागत सहयोग की जरूरत हैं।

संर्दभ ग्रंथ -%

एल्गर, सी. **(2006)** क्या अच्छा हुआ, क्या अच्छा नहीं हुआ - पूर्व सेवा शिक्षकों में चिंतन का विकास। चिंतनशील अभ्यास, **7(3) 287 301** “https://doi- org/ 10&1080@14623940600837327

गिब्स, जी. एच. **1988** लर्निंग बॉय इईंग रू ए गाइड टू टिचिंग एण्ड लर्निंग मैथड़ ऑक्सफोर्ड सेन्टर फॉर स्थफ एवे ललि डेवलपमेंट ऑक्सफोर्ड पॉलीटेकनिक लेखन फरदर एजूकेशन यूनीट आईएसबीएन **1-85338-0717** सेक्शन **4305**

जोहन सी. **(2000)** प्री कमिंग ए रिफ्लेक्टिव प्रकटिशनर ऑक्सफोर्ड ब्लैक पेट सोइस